वर्ष-17 अंक-198 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रुपए कानपुर, गुरूवार 20 जुलाई 2023

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, ऐटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात में प्रसारित

दैनिक
नगर छाया
आप की आवाज़.....

RNI N.UPHIN/2007/27090

सीएसए में विद्वत परिषद की 180वीं बैठक संपन्न

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर में कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह की अध्यक्षता में विद्वत परिषद की 180वीं बैठक संपन्न हुई। जिसमें सभी विद्वत परिषद के सम्मानित सदस्यों का स्वागत कुलसचिव डॉ पीके उपाध्याय ने किया। सर्वप्रथम स्नातक एवं परास्नातक छात्र-छात्राओं की किसी कारणवश परीक्षा छूट गई थी उनके भविष्य के दृष्टिगत उन्हें पुनः परीक्षा देने की अनुमति का अनुमोदन सम्मानित सदस्यों द्वारा किया गया। बैठक में संकाय सदस्यों की कमी के दृष्टिगत जब तक की नए शिक्षकों की भर्ती नहीं हो जाती है तब तक एक सुपरवाइजर 12 छात्र-छात्राओं को शोध कार्य करा सकेंगे,इसका अनुमोदन सम्मानित सदस्यों द्वारा दिया गया। छात्र छात्राओं के शोध की गुणवत्ता के दृष्टिगत विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं एवं शोध संस्थानों के वैज्ञानिकों/शिक्षकों के सुपरविजन में छात्र-छात्राएं शोध कार्य करेंगे का भी अनुमोदन लिया गया। पीएचडी की मौखिक परीक्षा के 9 महीने बाद ही छात्र-छात्राएं थीसिस जमा कर सकते थे,इस प्रतिबंध को समाप्त करने का भी अनुमोदन हुआ है।कार्यक्रम के अंत में अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉक्टर सीएल मौर्या ने सभी अतिथियों को धन्यवाद दिया। इस अवसर पर निदेशक शोध,निदेशक प्रसार एवं अधिष्ठाता गृह विज्ञान, अधिष्ठाता कृषि अभियंत्रण, अधिष्ठाता मत्स्य एवं डेयरी टेक्नोलॉजी इटावा सहित समस्त प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष उपस्थित रहे।

दैनिक जागरण 20/07/2023

15 साल पुरानी व्यवस्था खत्म अब जल्दी पूरी होगी पीएचडी

मौखिक परीक्षा के नौ माह बाद शोधपत्र जमा कराने का था नियम

जासं, कानपुर : सीएसए कृषि विश्वविद्यालय ने कृषि में पीएचडी करने वाले शोधार्थियों को राहत देते हुए 15 साल पुरानी व्यवस्था को समाप्त कर दिया है। पहले मौखिक परीक्षा के नौ माह बाद तक शोधार्थियों को पीएचडी के शोधपत्र जमा करने के लिए इन्तजार करना पड़ता था। पुरानी व्यवस्था समाप्त होने का लाभ पीएचडी करने वाले 125 शोधार्थियों को मिलेगा। बुधवार को विश्वविद्यालय के कमेटी हाल में आयोजित विद्वत परिषद की 180वीं बैठक में कुलपति डा. आनन्द कुमार सिंह के समक्ष सदस्यों ने करीब 15 साल से चली आ रही व्यवस्था को समाप्त करने का प्रस्ताव रखा था जिसे कुलपति सहित परिषद सदस्यों ने सर्वसम्मति से मंजूरी दे दी। दो घंटे से अधिक समय तक चली बैठक में 10 प्रस्तावों को मंजूरी दी गई।

विश्वविद्यालय प्रशासन ने वर्ष 2008 के करीब फैसला लिया था कि पीएचडी करने वाले शोधार्थी मौखिक परीक्षा के नौ माह बाद शोधपत्र जमा करा सकेंगे। यह प्रतिबंध लगने से शोधार्थियों को काफी परेशानी हो रही थी। कुलसचिव डा. पीके उपाध्याय ने बताया कि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कानपुर, इटावा और लखीमपुर खीरी जिले में संचालित आठ कृषि कालेजों में स्नातक और परास्नातक की परीक्षा में किन्हीं कारणों से शामिल न होने वाले 25 विद्यार्थियों को पुनः परीक्षा देने, संकायों में नए शिक्षकों की भर्ती होने तक एक सुपरवाइजर द्वारा 12 छात्र-छात्राओं को शोध कार्य कराने, विद्यार्थियों को शोध की गुणवत्ता के तहत विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं एवं शोध संस्थानों के विज्ञानियों और शिक्षकों के निर्देशन में शोध कार्य करने के प्रस्तावों को मंजूरी दी गई है। डा. सीएल मौर्या, विजय यादव सहित अन्य विभागों के निदेशक रहे।

सीएसए कृषि विश्वविद्यालय में विद्वत परिषद की 180वीं बैठक में उपस्थित कुलपति डा. आनन्द कुमार सिंह (दाएं) सहित परिषद के पदाधिकारियों ने प्रस्ताव पास किए ● संस्थान

हिंदुस्तान कानपुर 20/07/2023

सीएसए में अब पीएचडी नहीं करा पाएंगे शोध सहायक

कानपुर, प्रमुख संवाददाता। सीएसए में शोध सहायक अब पीएचडी नहीं करा पाएंगे। इनकी देखरेख में पीएचडी कर रहे शोधार्थियों को नए सुपरवाइजर आवंटित होंगे। बुधवार को यह फैसला विवि की 180वीं विद्वत परिषद की बैठक में हुआ।

विवि के कुलपति कक्ष में कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह की अध्यक्षता में बैठक हुई। इसमें कई महत्वपूर्ण फैसले लिए गए। विवि में पढ़ाने वाले गेस्ट फैकल्टी को अभी तक 1500 प्रति लेक्चर मिलता है पर अब इन्हें 50 हजार प्रति मिलेगा। उन्हें अन्य शैक्षणिक कार्यों में भी सहयोग करना होगा।

1500
रुपये प्रति लेक्चर के बजाए 50 हजार प्रति माह मिलेंगे गेस्ट फैकल्टी को

बैठक में कुछ छात्रों का मामला रखा गया, जिनकी परीक्षाएं किसी कारणवश छूट गई थी। सभी सदस्यों ने छात्रहित देखते हुए विशेष परीक्षा कराने की अनुमति प्रदान कर दी है। छात्र तीन साल बाद थीसिस जमा कर सकेगा।

अमर उजाला 20/07/2023

सीएसए में नहीं पढ़ाएंगे शोध सहायक

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) में शोध सहायक अब संस्थान में नहीं पढ़ा पाएंगे, न ही पीएचडी नहीं करा पाएंगे। इन शोध सहायकों की देखरेख में पीएचडी कर रहे शोधार्थियों को भी नए सुपरवाइजर आवंटित किए जाएंगे। विवि में करीब 40 शोधार्थी हैं जो शोध सहायकों की देखरेख में पीएचडी कर रहे हैं। यह फैसला विवि की 180वीं विद्वत परिषद की बैठक में हुआ।

कुलपति कक्ष में बुधवार को कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह की अध्यक्षता में बैठक हुई। विवि में पढ़ाने वाले गेस्ट फैकल्टी को अभी तक 1500 रुपये प्रति लेक्चर का भुगतान किया जाता है। तय हुआ कि अब गेस्ट फैकल्टी को 50 हजार रुपये प्रति माह का फिक्स भुगतान किया जाएगा। छात्रों की परीक्षा छूटने का मामला रखा गया। सभी सदस्यों ने विशेष परीक्षा कराने की अनुमति दी है। वहीं, तय हुआ कि एक शिक्षक को 12 छात्रों का पीएचडी सुपरवाइजर बनाया जा सकेगा। (संवाद)

एक सुपरवाइजर 12 स्टूडेंट को करा सकेगा रिसर्च वर्क

दैनिक जागरण आई नेक्स्ट

KANPUR (19 July): सीएसए से यूजी और पीजी की पढ़ाई कर रहे स्टूडेंट्स को यूनिवर्सिटी एडमिनिस्ट्रेशन ने गिफ्ट दिया है. यदि किसी स्टूडेंट की परीक्षा किन्हीं कारणवश छूट गई है तो वह पुन: परीक्षा दे सकता है. वेडनसडे को सीएसए में वीसी डॉ. आनंद कुमार सिंह की अध्यक्षता में हुई एकेडमिक काउंसिल की मीटिंग में इस प्रस्ताव को पास किया गया.

प्रतिबंध को किया खत्म

जब तक नए शिक्षकों की भर्ती नहीं हो जाती, तब तक एक सुपरवाइजर 12 स्टूडेंट्स को रिसर्च वर्क करा सकेंगे. रिसर्च की क्वॉलिटी को ध्यान में रखते हुए विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं एवं शोध संस्थानों के वैज्ञानिकों/शिक्षकों के सुपरविजन में स्टूडेंट्स रिसर्च कर सकेंगे. पीएचडी की मौखिक परीक्षा के 9 महीने बाद ही स्टूडेंट्स थीसिस जमा कर सकते थे, इस प्रतिबंध को भी समाप्त करने करने का प्रस्ताव पास हुआ.

कानपुर जागरण

'सब्जी की उत्पादकता बढ़ाने के लिए जैविक खाद का प्रयोग करें किसान'

जासं, कानपुर : फसलों में कृषि रक्षा रसायन के अधिक प्रयोग करने से मिट्टी व पर्यावरण दोनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इस घातक स्थिति से बचने के लिए किसानों को रसायनों के विकल्प जैसे उख्टा रोग और जड़ सड़न से बचाव के लिए ट्राइकोडरमा फफूंद का मिट्टी में प्रयोग करें। मिट्टीजनित कीड़ों के नियंत्रण के लिए ब्यूवेरियाबेसियाना जैविक नियंत्रण बैक्टीरिया का प्रयोग करें। मानसून सीजन में सब्जियों की फसल को कीट से बचाव के आसान तरीके और फसलों की जैविक खाद की उपयोगिता सहित अन्य विंदुओं के बारे में बुधवार को

दैनिक जागरण के प्रश्न प्रहर में पाठकों के सवालों का जवाब देते सीएसए कृषि विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग के शाकभाजी सस्यविद डा. राजीव • जागरण

दैनिक जागरण कार्यालय सर्वोदय नगर में आयोजित प्रश्न पहर में सीएसए कृषि विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग के शाकभाजी सस्यविद डा. राजीव ने पाठकों के सवालों के जवाब दिए।

- **सब्जियों की फसल में हरे कीड़े पड़ गए हैं। रतनपुर से प्रीति, बागपत से सौरभ।**
- मानसून का मौसम कीड़ों के पनपने के अनुकूल है। सब्जियों की तुड़ाई हो रही है तो नीम के तेल का छिड़काव करते रहें। यदि पौधे छोटे हैं तो उन पर इमिडाकोलोप्रिड दवा एक एमएल को तीन लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- **भिंडी की फसल पर कीट का प्रकोप बढ़ गया है, क्या करें? मिथिलेश यादव, ग्वालटोली**
- भिंडी की फसल में तीन एमएल नीम का तेल तीन लीटर पानी में मिलाकर प्रत्येक सप्ताह छिड़काव करें।
- **वर्षा का पानी खेत में भरने से मक्का की फसल पीली पड़ती जा रही है? सुंदरलाल, उजियारा गांव, रमईपुर**
- पहले तो खेत में अविलंब जलनिकासी की व्यवस्था करें। फिर मक्का की पीली पड़ रही फसल में यूरिया का प्रयोग करें। सूक्ष्म पोषक तत्वों के मिश्रण का पर्णीय छिड़काव करें।
- **मानसून सीजन में कौन सी सब्जियों की फसल लगाई जा सकती है। इसमें कितनी मात्रा में खाद और उर्वरक का उपयोग करें? अशोक, किदवई नगर।**
- वर्तमान सीजन लौकी, करेला, खीरा, कद्दू, तोरई, परवल, टिंडा, खरबूजा और तरबूज सहित अन्य लतावाली फसलों की बोआई का उचित समय है। औसतन 55 दिन में फसल तैयार हो जाती है। एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में 25 टन तक सड़ी गोबर की खाद और 200 ग्राम यूरिया, सिंगल सुपर फास्फेट, 120 ग्राम म्यूरेट आफ पोटाश का प्रयोग करें।
- **बालू में करेला, खीरा या तोरई की फसल लगाने पर कीट उन्हें नष्ट कर देते हैं? रामकुमार गौड़, बिठूर।**
- बालू में होने वाली फसलों में कच्ची खाद डालने से वो बढ़वार नहीं ले पाते हैं। ऐसे में बोआई में गोबर की खाद, वर्मी कंपोस्ट का प्रयोग करें। लता वाली फसलों पर जो कीट लगते हैं, उसके नियंत्रण के लिए कार्बारिल दवा दो ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर 15 दिन के अंतराल में छिड़काव करें।
- **रासायनिक उर्वरकों के अधिक प्रयोग से मिट्टी में खत्म हो रहे पोषक तत्व**
- शाकभाजी सस्यविद डा. राजीव ने कहा कि अधाधुंध रासायनिक उर्वरक के प्रयोग किए जाने से फसलों की गुणवत्ता खराब हुई है। ऐसे में किसानों को टिकाऊ खेती के लिए रासायनिक उर्वरकों पर निर्भर न रहकर गोबर की खाद, केंचुए की खाद, जैविक उर्वरकों, हरी खाद, नीम की खली आदि का प्रयोग करना चाहिए।
- **किसान इस तरह बढ़ाएं मिट्टी की उर्वरा शक्ति**
- किसाना खेतों में जलभराव के दौरान फौरन जलनिकासी की व्यवस्था करें। मानसून खत्म होते ही अगस्त माह में उड़द, मूंग, लोबिया की फसल को हरी खाद के रूप लगा सकते हैं। एक माह के बाद इसकी जोताई कर खेत में पलट दें। इससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ेगी।